© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Science and Technology

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का अध्ययन (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ0 गार्गी ओझा
शोध–निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक–शिक्षा विभाग,
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

प्रेमचन्द्र यादव
शोधछात्र, (शिक्षाशास्त्र)
शिक्षक–शिक्षा विभाग,
नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

सारांश– प्रस्तुत अध्ययन **''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का अध्ययन (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में)'' करना है।** समस्या कथन के मद्देनजर अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया गया है। शोधकर्ता ने अपनी समस्या से सम्बन्धित माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 50 छात्र–छात्राएँ शहरी क्षेत्र से एवं 50 छात्र–छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्र से चयनित किये गये है। आत्म–प्रकटीकरण के लिए डॉ0 विरेन्द्र सिन्हा (आगरा) द्वारा निर्मित ''सिन्हा आत्म प्रकटीकरण अनुसूची'' (Sinha Self-Disclosure Inventory) का प्रयोग किया गया है। एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण एवं विवेचन हेतु समस्या की प्रकृति के अनुरूप मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्र–छात्राओं में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्र–छात्राओं की तुलना में अधिक है।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, छात्र–छात्राएँ, आत्म–प्रकटीकरण, शहरी, ग्रामीण।

प्रस्तावना–

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में ज्ञान के भण्डार में वृद्धि होती है और संचित ज्ञान के द्वारा ही विद्यार्थियों में किसी चीज पर अपने मत को व्यक्त करने की शक्ति मिलती है। वह अपने ज्ञान के द्वारा ही व्यक्ति वाद–विवाद एवं

तर्क–वितर्क कर सकता है, अपने ज्ञान एवं विचारों में परिवर्तन कर सकता है तथा सिद्धान्तों, योजनाओं एवं कार्यक्रम का आयोजन कर सकता है। विद्यार्थियों में जैसे–जैसे ज्ञान की वृद्धि तथा सामाजिक बुद्धि का विकास होता है वैसे–वैसे विद्यार्थी अपने आत्म प्रकटीकरण को अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकता है। जिन विद्यार्थियों में इसकी कमी पायी जाती है उन्हें अपने बातों को व्यक्त करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

डॉ0 राधाकृष्णन् का मत है कि शिक्षा के द्वारा मनुष्य में, अपनी बात कहने, अपने विश्वासों को व्यक्त करने और अपनी आस्थाओं के अनुसार जीने की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए। यही आत्म–प्रकटीकरण मनुष्य की रचनात्मकता का स्रोत है। इसलिये राधाकृष्णन जी का मत है कि, ''शैक्षणिक प्रक्रिया में रचनात्मकता को विशिष्ट और आदरपूर्ण स्थान मिलना चाहिए। मनुष्य को अपनी विशेष विशिष्टता यह है कि वह सृष्टिकर्ता है और ईश्वर के समान सृष्टिकर्ता है और सृष्टि के रचनात्मक विकास में वह ईश्वर से पूरा–पूरा सहयोग कर रहा है। इसी दृष्टि से वह सक्रिय और उद्देश्यपूर्ण अभिकर्ता माना जाता है। परिवर्तन पहले मनुष्य के मस्तिष्क में नये विचार के रूप में जन्म लेते हैं और क्रियात्मक रूप में परणित किये जाते हैं।'' इस प्रकार आत्म प्रकटीकरण दैनिक प्रयोजनों का साधन हैं और हर कीमत पर शिक्षा को आत्म प्रकटीकरण के अवसर उपलब्ध करनी चाहिये।

विद्यार्थी में किसी विषय पर अपने मत की आत्म–प्रकटीकरण उसके अन्दर की अन्तःक्रिया के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। जब विद्यार्थी किसी विषय पर तर्क–वितर्क या विचार विमर्श करता है तो वह अपने बातों को व्यक्त करता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में आत्म–प्रकटीकरण पूर्ण रूप से विकसित हो जाती है। विद्यार्थियों में आत्म–प्रकटीकरण का विकास उसके सामाजिक वातावरण से ज्यादा विकसित होती है जो विद्यार्थी सामाजिक वातावरण में अच्छे ढंग से अपने आपको समाहित कर लेता है उसके अन्दर किसी विषय पर आत्म–प्रकटीकरण अधिक होती है।

वर्तमान समय बाजारीकरण एवं व्यावसायिक का ज्यादा बोल–बाला है। विद्यार्थी माध्यमिक स्तर के बाद ज्यादातर व्यावसायिक शिक्षा की ओर अग्रसर हो रहे है, तथा व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर वे बाजार में नौकरी करने जाते है जहाँ पर आत्म–प्रकटीकरण का विशेष योगदान होता है। आत्म–प्रकटीकरण न होने पर वे चाहे बाजारवाद हो या सरकारी या गैर सरकारी नौकरी में अपने आपको उचित समायोजन नही कर सकते है। आत्म–प्रकटीकरण आज की विशेष माँग है। अतः अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्म–प्रकटीकरण के स्तर का पता लगाने की कोशिश की है।

समस्या कथन–

''माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का अध्ययन (शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में)।''

अध्ययन का उद्देश्य–

अध्ययन समस्या को दृष्टिगत रखते हुये निम्नलिखित उद्देश्यों का चयन किया गया है–

1. शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के आलोक में निम्नलिखित 'शून्य परिकल्पनाओं' (H_0) की रचना की गयी है –

1. शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रयुक्त शोध प्रविधि

समस्या कथन के मद्देनजर अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया गया है। शोधकर्ता ने अपनी समस्या से सम्बन्धित माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें 50 छात्र–छात्राएँ शहरी क्षेत्र से एवं 50 छात्र–छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्र से चयनित किये गये है। आत्म–प्रकटीकरण के लिए डॉ0 विरेन्द्र सिन्हा (आगरा) द्वारा निर्मित ''सिन्हा आत्म प्रकटीकरण अनुसूची'' (Sinha Self-Disclosure Inventory) का प्रयोग किया गया है। एकत्रित आँकड़ों के विश्लेषण एवं विवेचन हेतु समस्या की प्रकृति के अनुरूप मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं क्रान्तिक–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

उद्देश्य–1 शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

H_1 शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण में सार्थक अन्तर है।

H_{01} शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका – 1

शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	क्रान्तिक अनुपात **(C.R.)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
1	शहरी	50	450.40	53.34	31.12	15.21	2.04	0.05 (2.01) सार्थक
2	ग्रामीण	50	419.28	54.19				

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण का मध्यमान क्रमशः 450.40 एवं 419.28 है और मानक विचलन क्रमशः 53.34 तथा 54.19 है।

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का माान 2.04 है जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.01 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। दोनों मध्यमानों

पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्रों में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

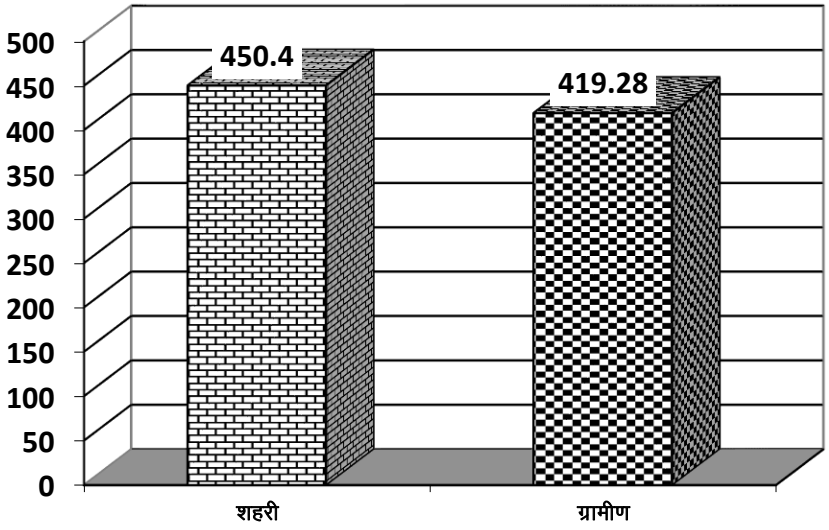

शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म–प्रकटीकरण के मध्यमानों का आरेखन चित्र

उद्देश्य–2 **शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।**

H_2 **शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण में सार्थक अन्तर है।**

H_{02} **शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

तालिका – 2

शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या **(N)**	मध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(SD)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1-M_2)**	मानक त्रुटि **(S_{ED})**	क्रान्तिक अनुपात **(C.R.)**	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान
1	शहरी	50	437.84	42.45	40.32	12.77	3.16	0.05

2	ग्रामीण	50	397.52	47.72				(2.01) सार्थक

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण का मध्यमान क्रमशः 437.84 एवं 397.52 है और मानक विचलन क्रमशः 42.45 तथा 47.72 है।

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के क्रान्तिक अनुपात (C.R.) का माान 2.01 है जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.01 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। दोनों मध्यमानों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्राओं में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

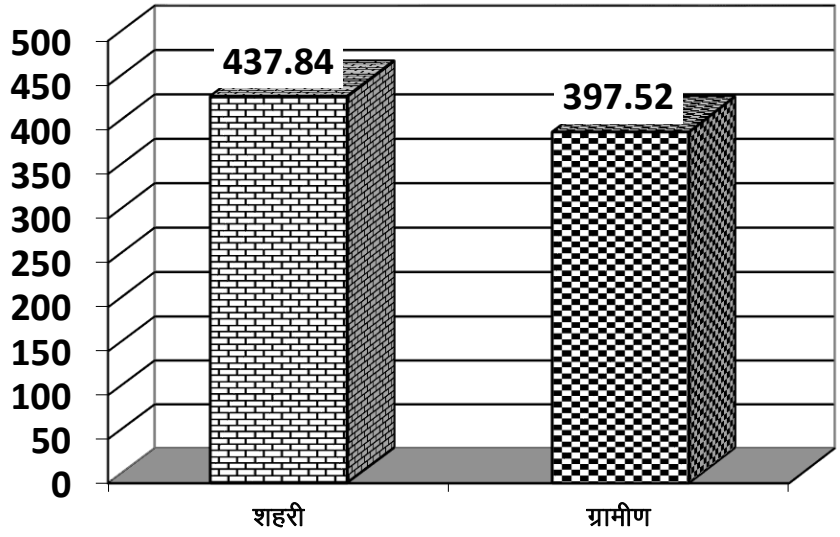

शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के छात्राओं की आत्म–प्रकटीकरण के मध्यमानों का आरेखन चित्र

परिणाम–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये–

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्रों में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्राओं में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

निष्कर्ष–

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्रों में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्रों की तुलना में श्रेष्ठ प्रतीत होते है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर दोनों क्षेत्रों के छात्रों में सार्थक अन्तर है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्राओं में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्राओं की तुलना में श्रेष्ठ प्रतीत होते है अर्थात् 0.05 सार्थकता स्तर पर दोनों क्षेत्रों की छात्राओं में सार्थक अन्तर है।

समान अध्ययन **मिश्रा, कुमार विकास (2017)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् शहरी छात्र–छात्राओं में आत्म–प्रकटीकरण ग्रामीण छात्र–छात्राओं की तुलना में अधिक है। जैसा कि शहरी क्षेत्रों के किशोर–किशोरियों के अभिभावक उनकी छोटी–बड़ी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं वहीं उन्हें अपने अभिभावक के साथ किसी भी बातों को कहने में हिचकिचाहट नहीं होती है तथा वे अपने भाई, बहन तथा दोस्त के साथ–साथ विद्यालय में शिक्षकों से खुल कर बाते करते हैं जिससे उनकी आत्म–प्रकटीकरण में वृद्धि होती जाती है वहीं ग्रामीण स्तर के किशोर–किशोरियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर कमजोर होने के साथ–साथ माता–पिता के शैक्षणिक अनुभव भी कम होती है जिससे वे अपने बच्चों पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं वहीं उनकी आवश्यकताओं को कम ही पूरा कर पाते हैं जिससे वे अपनी आत्म–प्रकटीकरण में कमजोर होते हैं। इसी के परिप्रेक्ष्य में **अना एवं निनोसलवा (2017)** ने किशोरों के स्व–अभिव्यक्ति का अभिभावक–व्यवहार से सम्बन्ध पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में, किशोरों को उनके दैनिक गतिविधियों, समस्याओं और चिंताओं के साथ–साथ किशोरों के माता–पिता के व्यवहार की धारणाओं को व्यवस्थित किया, साथ ही उन मुद्दों के बारे में भी जिन्हें माता–पिता अस्वीकार कर सकते हैं। प्रकटीकरण के लिए माता–पिता की सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ– पारस्परिक भागीदारी, स्वायत्त समर्थन के विषयों के आसपास पहचाना और समूहीकृत किया गया। माता–पिता के स्वायत्ततापूर्ण तरीके से संरचना प्रदान करना और किशोरों की इच्छाओं के अनुरूप संरचना किशोरों के स्व–अभिव्यक्ति में सकारात्मकता प्रदान करती है।

सुझाव–

अभिभावकों का कर्त्तव्य बनता है कि वे वर्ष भर अपने बच्चों का ख्याल रखें। अपने बच्चों की जरूरतों व भावनाओं को समझें। अभिभावक अपने बच्चों को स्वावलम्बी, पुरुषार्थी, निर्भीक, उत्साही व कर्मठ बनाएं। अपने बच्चों को कुसंगति से बचाएं। उन्हें समय का सदुपयोग करना सिखाएं। बच्चों के प्रति कठोरता नहीं अपितु सहानुभूति दर्शानी चाहिए। माता–पिता का कर्त्तव्य है कि अपने बच्चों को पढ़ाई करने हेतु एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करें। अध्यापकों से समन्वयता स्थापित कर अपने बच्चों की जरूरतों, कमजोरियों व समस्याओं को जानकर उनका निराकरण करें। विद्यार्थियों को सकारात्मक प्रेरणा व उपयुक्त वातावरण देने पर ही वे अपनी प्रतिभा व क्षमताओं को उजागर कर सकें। अपने बच्चों को विचारशील, आत्मविश्वासी, सुदृढ़ संकल्प युक्त व आशावादी बनाएं, उन्हें संघर्ष करने की प्रेरणा दें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अना एवं निनोसलवा (2017). पैरेन्टल बिहैवियर रिलेटेड टू एडवोलसेन्ट्स, सेल्फ–डिस्कोसर : एडवोल्सेन्ट्स व्यू, रिसर्चगेट, https://www.researchgate.net/ publication/258189507
- पोपली, सोनिया एवं सिंह, उमाकांती (2015). शिक्षकों के व्यक्तित्व का उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन, पेरीफेक्स–इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वॉ0 4, इश्शू–10, पृ0 214–215
- मुश्ताक, सबरीना एवं रानी, गीता (2016). इफेक्ट ऑफ सोशल मैच्युरिटी एण्ड सेल्फ–कान्सेप्ट ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ डिस्ट्रिक्ट बुदगाम (जे. एण्ड के.), इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वाल्यूम–1, इश्शू–8, पृ0 13–18
- मेहाई, इउलिया मेहैला (2011). सेल्फ–डिस्कोसर एण्ड पैरेन्ट्स–चिल्ड्रेन रिलेशनशिप डिपेडिंग ऑन पैरेन्टल स्टाइल, इण्टरनेशनल कॉन्फरेन्स ऑफ साइंटिफिक पेपर–आर्म्ड फोसेस एकेडमी सलोवक रिपब्लिक, पृ0 307–312
- मिश्रा, कुमार विकास (2017). शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का आत्म–प्रकटीकरण का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।